

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

लोकतंत्र, भारतीय ज्ञान प्रणाली और अंबेडकर

डॉ० टेक नारायण साहु

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

डी० बी० के० एन० कॉलेज, नरहन, समस्तीपुर

Email: tekmarayan489@gmail.com

सार

लोकतंत्र, भारतीय ज्ञान प्रणाली और बी. आर. अंबेडकर के विचारों के बीच का संबंध भारत के सामाजिक-राजनीतिक विकास को समझने में एक महत्वपूर्ण मिलन बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है। यह शोध पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि भारत में लोकतांत्रिक आदर्शों को स्वदेशी बौद्धिक परंपराओं द्वारा कैसे आकार दिया गया है, और अंबेडकर द्वारा जाति, असमानता और सामाजिक न्याय के संदर्भ में उनकी आलोचनात्मक पुनर्व्याख्या कैसे की गई है। जहाँ एक ओर भारतीय ज्ञान प्रणाली में धर्म, न्याय और सर्वोदय जैसी अवधारणाओं में निहित दार्शनिक परंपराएँ शामिल हैं, वहीं ऐतिहासिक रूप से यह ऐसी पदानुक्रमित संरचनाओं के साथ भी सह-अस्तित्व में रही है जो लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत थीं। अंबेडकर ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर आधारित लोकतंत्र की एक परिवर्तनकारी दृष्टि की वकालत करके इन विरोधाभासों को चुनौती दी।

यह अध्ययन अंबेडकर की पारंपरिक भारतीय समाज की आलोचना और लोकतांत्रिक आदर्शों के उनके पुनर्निर्माण का विश्लेषण करने के लिए द्वितीयक स्रोतों पर आधारित एक गुणात्मक पद्धति का उपयोग करता है। यह समकालीन लोकतांत्रिक विमर्श में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता और अंबेडकर के विचार किस प्रकार पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक संवैधानिक व्यवस्था से जोड़ते हैं, इसकी भी पड़ताल करता है। अंबेडकर की लोकतंत्र की अवधारणा राजनीतिक तंत्र से परे जाकर सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र को भी शामिल करती है, जिससे भारत में लोकतांत्रिक व्यवहार को एक नई परिभाषा मिलती है। पश्चिमी उदारवादी विचारों और भारतीय बौद्धिक परंपराओं, दोनों के साथ उनका जुड़ाव एक अद्वितीय संश्लेषण का निर्माण करता है जो आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। भारत में एक सार्थक लोकतांत्रिक ढाँचे के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्वपूर्ण तत्वों को आत्मसात करना आवश्यक है, और साथ ही उन संरचनात्मक असमानताओं को भी संलग्न करना होगा, जैसा कि अंबेडकर ने जोर दिया था।

मुख्य-शब्द: लोकतंत्र, अंबेडकर, भारतीय ज्ञान प्रणाली, सामाजिक न्याय, संविधान।

1. भूमिका

भारत में लोकतंत्र, राजनीतिक आधुनिकता और गहरी जड़ों वाली सभ्यतागत परंपराओं के मेल का एक अद्वितीय प्रयोग है। कई पश्चिमी लोकतंत्रों के विपरीत, जो सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित हुए, भारतीय लोकतंत्र एक ऐसे औपनिवेशिक-पश्चात संदर्भ में उभरा जो अत्यधिक विविधता, गहरी जड़ें जमा चुकी असमानताओं और ऐतिहासिक पदानुक्रमों से चिह्नित था (सक्सेना और

सक्सेना, 2021)। ऐसे जटिल समाज में लोकतंत्र को अपनाने से इसकी दार्शनिक नींव और व्यावहारिक कार्यप्रणाली के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं। इस संदर्भ में, भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों के बीच की अंतर्क्रिया जाँच-पड़ताल का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन जाती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में बौद्धिक परंपराओं का एक विशाल भंडार शामिल है, जिसमें सदियों से विकसित दार्शनिक, नैतिक और राजनीतिक विचार शामिल हैं। धर्म (नैतिक कर्तव्य), न्याय (इंसाफ), लोकसंग्रह (सामूहिक कल्याण), और सर्वोदय (सभी का उत्थान) जैसी अवधारणाओं ने ऐतिहासिक रूप से भारत में शासन और सामाजिक संगठन को आकार दिया है (शर्मा, 2024)। अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र जैसे प्राचीन ग्रंथ प्रशासनिक प्रथाओं, कानूनी प्रणालियों और नैतिक ढाँचों के बारे में गहरी जानकारी देते हैं। ये परंपराएँ नैतिक जिम्मेदारी और सामूहिक सद्भाव पर जोर देती हैं, जो किसी भी लोकतांत्रिक प्रणाली के जरूरी तत्व हैं। हालाँकि, ये कठोर सामाजिक स्तरीकरण, विशेष रूप से जाति व्यवस्था के साथ भी मौजूद थीं, जिसने असमानता और बहिष्कार को संस्थागत रूप दे दिया था (दत्ता, 2025)।

लोकतांत्रिक सिद्धांत में निहित समतावादी आदर्शों और पारंपरिक भारतीय समाज की पदानुक्रमित प्रकृति के बीच का विरोधाभास एक बड़ी चुनौती पेश करता है। जहाँ एक ओर भारतीय ज्ञान प्रणाली मूल्यवान नैतिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, वहीं जाति-आधारित भेदभाव से इसका जुड़ाव, आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे कि समानता, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अधिकारों के संदर्भ में इसकी गहन जाँच और पुनर्व्याख्या को आवश्यक बनाता है (सक्सेना और सक्सेना, 2021)। परंपरा और आधुनिकता के बीच का यह तनाव ही भारत के लोकतांत्रिक अनुभव के मूल में स्थित है।

इस संदर्भ में, बी. आर. अंबेडकर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। एक अग्रणी समाज सुधारक, अर्थशास्त्री और भारतीय संविधान के मुख्य निर्माता के रूप में, अंबेडकर ने भारतीय समाज की व्यापक आलोचना प्रस्तुत की और लोकतंत्र का एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण सामने रखा। उन्होंने तर्क दिया कि लोकतंत्र केवल चुनावों और प्रतिनिधि सरकार जैसी राजनीतिक संस्थाओं तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसका विस्तार सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों तक भी होना चाहिए (रमेश, 2022)। अंबेडकर के लिए, लोकतंत्र मूलतः जीवन जीने का एक ऐसा तरीका था जिसकी विशेषता स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व थीकृये ऐसे सिद्धांत थे जिनके बारे में उनका मानना था कि एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज के निर्माण के लिए ये अनिवार्य हैं।

जाति व्यवस्था पर अंबेडकर की आलोचना उनके लोकतांत्रिक चिंतन का एक केंद्रीय पहलू है।

उन्होंने जाति को 'श्रेणीबद्ध असमानता' की एक ऐसी प्रणाली के रूप में देखा जिसने समाज को खंडित कर दिया और लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली के लिए आवश्यक एक एकीकृत सार्वजनिक क्षेत्र के विकास में बाधा डाली (दत्ता, 2025)। उनके अनुसार, सामाजिक लोकतंत्र के अभाव में राजनीतिक लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता था। यह अंतर्दृष्टि, अंतर्निहित सामाजिक असमानताओं को दूर किए बिना केवल लोकतांत्रिक संस्थाओं को अपना लेने की सीमाओं को उजागर करती है। उनकी वह प्रसिद्ध चेतावनी कि भारत "विरोधाभासों भरे जीवन" में प्रवेश कर रहा है, जहाँ राजनीतिक समानता के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक असमानता भी विद्यमान है, समकालीन समय में भी अत्यंत प्रासंगिक बनी हुई है (सुरेशा, 2024)।

इसके साथ ही, अंबेडकर ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं किया। इसके विपरीत, उन्होंने इसके साथ आलोचनात्मक और चयनात्मक ढंग से जुड़ाव रखा। उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म की ओर उनका झुकाव, एक ऐसी स्वदेशी परंपरा से प्रेरणा लेने के उनके प्रयास को दर्शाता है जो समानता, तार्किकता और करुणा पर जोर देती है (सलूजा, 2024)।

भारतीय संविधान, जिसे मुख्य रूप से अंबेडकर के दृष्टिकोण द्वारा ही आकार प्रदान किया गया है, इसी संश्लेषण की एक ठोस अभिव्यक्ति है। इसमें मौलिक अधिकार, कानून का शासन और सामाजिक न्याय जैसे सार्वभौमिक सिद्धांत शामिल हैं, और साथ ही यह सकारात्मक कार्यवाई और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए सुरक्षा उपायों जैसे प्रावधानों के माध्यम से भारतीय समाज की विशिष्ट चुनौतियों का भी समाधान करता है (दुबे, 2020)।

2. साहित्य की समीक्षा

बी. आर. अंबेडकर और लोकतंत्र पर विद्वानों की चर्चा इस बात पर जोर देती है कि उन्होंने लोकतांत्रिक शासन की नींव के रूप में सामाजिक न्याय को कितना महत्व दिया। अंबेडकर लोकतंत्र को केवल एक राजनीतिक व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रणाली के रूप में देखते थे जो सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में समानता सुनिश्चित करे (रमेश, 2022)।

कई विद्वानों का तर्क है कि अंबेडकर सामाजिक लोकतंत्रकृजो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे पर आधारित हैकृको राजनीतिक लोकतंत्र के लिए एक अनिवार्य शर्त मानते थे (सुरेशा, 2024)। सामाजिक समानता के बिना, लोकतांत्रिक संस्थाएँ अप्रभावी ही रहेंगी (माथुर और ठाकुर, 2022)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली पर किए गए अध्ययन बताते हैं कि धर्म, सर्वोदय और न्याय जैसी पारंपरिक अवधारणाओं ने भारत में राजनीतिक चिंतन को काफी हद तक प्रभावित किया है (शर्मा, 2024)। हालाँकि, इन ढाँचों को आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों के अनुरूप बनाने के लिए इनकी पुनर्व्याख्या की आवश्यकता है (सक्सेना और सक्सेना, 2021)।

लोकतंत्र के मार्ग में एक बड़ी बाधा के रूप में जाति पर अंबेडकर की आलोचना की व्यापक रूप से चर्चा की जाती है। उन्होंने तर्क दिया कि जाति-आधारित विभाजन समाज को खंडित करते हैं और लोकतांत्रिक एकता को कमजोर करते हैं (दत्ता, 2025)।

विद्वान भारतीय संविधान में लोकतांत्रिक सिद्धांतों जिनमें मौलिक अधिकार और सकारात्मक कार्यवाई शामिल हैं, इसे स्थापित करने में अंबेडकर की रचनात्मक भूमिका पर भी जोर देते हैं (दुबे, 2020)।

हाल के अध्ययन अंबेडकर द्वारा पश्चिमी लोकतांत्रिक चिंतन और भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक वास्तविकताओं के बीच किए गए समन्वय को उजागर करते हैं, जिससे उनके विचार विश्व स्तर पर प्रासंगिक बन जाते हैं (सलूजा, 2024)।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में लोकतंत्र की अवधारणा का विश्लेषण करना।
2. भारत में लोकतांत्रिक सिद्धांत के क्षेत्र में बी. आर. अंबेडकर के योगदान की जाँच करना।
3. पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ एकीकृत करने में अंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता का पता लगाना।

4. अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन द्वितीयक तथ्यों पर आधारित गुणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाता है।

तथ्यों के स्रोत

- पुस्तकें, शोध लेख और पत्रिकाएँ
- सरकारी दस्तावेज़ और संवैधानिक प्रावधान
- भारतीय ज्ञान प्रणालियों की विद्वतापूर्ण व्याख्याएँ

विश्लेषण की विधि

यह अध्ययन लोकतंत्र, भारतीय ज्ञान प्रणाली और अंबेडकर के चिंतन के बीच के संबंधों की जाँच करने के लिए विषयगत और व्याख्यात्मक विश्लेषण का उपयोग करता है (क्रेसवेल, 2014)। पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोणों की तुलना करने के लिए भी तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग किया जाता है (सक्सेना और सक्सेना, 2021)।

5. वैचारिक ढाँचा

इस अध्ययन का वैचारिक ढाँचा लोकतंत्र, भारतीय ज्ञान प्रणाली, और बी. आर. अंबेडकर के दार्शनिक योगदानों के बीच के आपसी संबंधों पर आधारित है। यह समझने का प्रयास करता है कि भारतीय लोकतंत्र के स्वरूप को आकार देने में ये तीनों आयाम एक-दूसरे के साथ कैसे परस्पर क्रिया करते हैं, कैसे उनमें टकराव होता है, और कैसे वे एक-दूसरे के पूरक बनते हैं। यह ढाँचा प्रकृति में विश्लेषणात्मक है और शास्त्रीय तथा आधुनिक, दोनों ही प्रकार के सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से प्रेरणा लेता है।

5.1 लोकतंत्र: राजनीतिक संस्थाओं से परे

लोकतंत्र को आमतौर पर सरकार की एक ऐसी प्रणाली के रूप में समझा जाता है जिसकी विशेषताएँ स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, प्रतिनिधित्व, कानून का शासन और मौलिक अधिकारों की सुरक्षा हैं। हालाँकि, ऐसी प्रक्रियात्मक समझ सीमित है, विशेष रूप से भारत जैसे उन समाजों में जहाँ गहरी सामाजिक असमानताएँ मौजूद हैं (रमेश, 2022)।

अंबेडकर ने लोकतंत्र के अर्थ का विस्तार करते हुए उसके मूलगामी आयामों पर जोर दिया, जिनमें सामाजिक और आर्थिक न्याय शामिल हैं। उनके अनुसार, लोकतंत्र केवल सरकार का एक रूप नहीं है, बल्कि यह “सहयोगी जीवन का एक तरीका” है— एक ऐसा नैतिक और सामाजिक आदर्श जो व्यक्तियों के आपसी संबंधों को संचालित करता है (सुरेशा, 2024)। इस व्यापक अवधारणा में निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

- राजनीतिक लोकतंत्र: वोट देने और प्रतिनिधित्व के माध्यम से शासन में समान भागीदारी।
- सामाजिक लोकतंत्र: जाति, वर्ग और लिंग-आधारित असमानताओं का उन्मूलन।
- आर्थिक लोकतंत्र: संसाधनों और अवसरों का निष्पक्ष वितरण।

इन आयामों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में विफलता से विरोधाभास उत्पन्न हो सकते हैं, जहाँ राजनीतिक समानता के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक असमानता भी मौजूद रहती है, एक ऐसी स्थिति

जिसके प्रति अंबेडकर ने कड़ा आगाह किया था (दत्ता, 2025)।

5.2 भारतीय ज्ञान प्रणाली: नैतिक आधार और विरोधाभास

भारतीय ज्ञान प्रणाली से तात्पर्य भारत में दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र, नैतिकता और कानून जैसे विभिन्न विषयों में विकसित ज्ञान के संचयी भंडार से है। यह उन ग्रंथों, परंपराओं और प्रथाओं में गहराई से निहित है जो सदियों से विकसित हुई हैं (शर्मा, 2024)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के कुछ मुख्य सिद्धांतों में शामिल हैं:

- धर्म: नैतिक कर्तव्य और नैतिक आचरण का एक सिद्धांत जो व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को दिशा देता है।
- न्याय: न्याय, निष्पक्षता और तार्किक तर्क की अवधारणा।
- सर्वोदय: समाज के सभी वर्गों के कल्याण और उत्थान का विचार।
- लोकसंग्रह: सामूहिक भलाई और सामाजिक एकता की धारणा।

ये सिद्धांत शासन और सामाजिक संगठन के लिए एक मानक नैतिक ढाँचा प्रदान करते हैं। वे

कर्तव्यों, सामंजस्य और सामूहिक कल्याण पर जोर देते हैं, जो न्याय और समानता जैसे लोकतांत्रिक आदर्शों के साथ मेल खाते हैं।

हालाँकि, भारतीय ज्ञान प्रणाली विरोधाभासों से मुक्त नहीं है। ऐतिहासिक रूप से, यह पदानुक्रमित सामाजिक संरचनाओं, विशेष रूप से जाति व्यवस्था के साथ जुड़ा रहा है, जिसने असमानता और बहिष्कार को संस्थागत रूप दिया (दत्ता, 2025)। यह एक ऐसा विरोधाभास उत्पन्न करता है जहाँ नैतिक आदर्श उन प्रथाओं के साथ सह-अस्तित्व में रहते हैं जो लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर करती हैं।

इसलिए, यह वैचारिक ढाँचा भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक दोहरी इकाई के रूप में देखता है:

1. नैतिक और दार्शनिक अंतर्दृष्टियों का एक स्रोत जो लोकतंत्र को समृद्ध कर सकता है।
2. एक ऐसी प्रणाली जिसके पदानुक्रमित और बहिष्कारी तत्वों को हटाने के लिए
गहन पुनर्व्याख्या की
आवश्यकता है (सक्सेना और सक्सेना, 2021)।

5.3 अंबेडकर का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण: एक परिवर्तनकारी प्रतिमान

बी. आर. अंबेडकर के विचार इस वैचारिक ढाँचे के केंद्रीय स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। अंबेडकर का दृष्टिकोण आलोचनात्मक और रचनात्मक दोनों है, क्योंकि उन्होंने न केवल पारंपरिक प्रणालियों की सीमाओं की पहचान की, बल्कि लोकतंत्र का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया। अंबेडकर के दृष्टिकोण के मुख्य तत्व

1. स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व:

ये सिद्धांत लोकतंत्र की नैतिक नींव बनाते हैं। अंबेडकर ने इस बात पर जोर दिया कि ये मूल्य एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक लोकतांत्रिक समाज के प्रभावी ढंग से काम करने के लिए इन्हें एक साथ साकार किया जाना चाहिए (रमेश, 2022)।

2. जाति का उन्मूलन:

अंबेडकर ने जाति को भारत में लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ी बाधा माना। उन्होंने तर्क दिया कि जातिगत विभाजन सामाजिक एकता को नष्ट करते हैं और एक लोकतांत्रिक समुदाय के निर्माण में बाधा डालते हैं (दत्ता, 2025)।

3. संवैधानिक नैतिकता:

अंबेडकर ने संवैधानिक नैतिकता का विचार प्रस्तुत किया, जिसके तहत नागरिकों और नेताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे केवल पारंपरिक मानदंडों पर निर्भर रहने के बजाय संविधान में निहित मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करें (सुरेशा, 2024)।

4. सामाजिक न्याय:

उन्होंने लोकतांत्रिक प्रक्रिया में हाशिए पर पड़े समुदायों को शामिल करने को निश्चित करने के लिए आरक्षण और कानूनी सुरक्षा उपायों जैसी नीतियों की वकालत की (दुबे, 2020)।

5. तार्किकता और सुधार:

अंबेडकर ने समाज सुधार में तर्क और आलोचनात्मक सोच के महत्व पर जोर दिया। बौद्ध धर्म के साथ उनका जुड़ाव तार्किकता और करुणा पर आधारित एक नैतिक ढांचा निर्मित करने के उनके प्रयास को दर्शाता है (सलूजा, 2024)।

5.4 लोकतंत्र, भारतीय ज्ञान प्रणाली और अंबेडकर के बीच अंतर्संबंध

यह वैचारिक ढांचा इन तीनों घटकों के बीच की गतिशील अंतर्क्रिया को उजागर करता है:

- भारतीय ज्ञान प्रणाली और लोकतंत्र:
भारतीय ज्ञान प्रणाली नैतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करता है, लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ तालमेल बिठाने के लिए इसकी पुनर्व्याख्या की आवश्यकता है।
- अंबेडकर और भारतीय ज्ञान प्रणाली:
अंबेडकर ने ज्ञान का आलोचनात्मक परीक्षण किया; उन्होंने इसके पदानुक्रमित तत्वों को अस्वीकार कर दिया, जबकि इसके समतावादी और नैतिक पहलुओं को अपनाया।
- अंबेडकर और लोकतंत्र:
अंबेडकर ने लोकतंत्र का विस्तार करते हुए इसे एक ऐसी व्यापक प्रणाली का रूप दिया, जिसमें राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक तीनों आयाम समाहित हैं।
इस प्रकार, अंबेडकर पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं। उनकी विचारधारा एक ऐसे संश्लेषण को संभव बनाती है, जो ज्ञान की नैतिक शक्तियों को अक्षुण्ण रखते हुए उसकी बहिष्करणकारी प्रथाओं को समाप्त कर देता है।

5.5 अध्ययन का विश्लेषणात्मक मॉडल

यह अध्ययन एक विश्लेषणात्मक मॉडल द्वारा निर्देशित है जो तीन स्तरों को एकीकृत करता है:

1. मानक स्तर:

भारतीय ज्ञान प्रणाली और लोकतांत्रिक सिद्धांत (न्याय, समानता, कर्तव्य) से व्युत्पन्न नैतिक सिद्धांत।

2. आलोचनात्मक स्तर:

जाति, असमानता और पारंपरिक पदानुक्रमों पर अंबेडकर की आलोचना।

3. परिवर्तनकारी स्तर:

एक न्यायपूर्ण और समावेशी लोकतांत्रिक समाज को आकार देने में अंबेडकर के विचारों का अनुप्रयोग। यह बहु-स्तरीय ढांचा इस बात का व्यापक विश्लेषण करने की अनुमति देता है कि नैतिक परंपराओं और आधुनिक मूल्यों के एकीकरण के माध्यम से भारत में लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है।

5.6 ढांचे की प्रासंगिकता

यह वैचारिक ढांचा समकालीन भारत में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ परंपरा, पहचान और लोकतंत्र के इर्द-गिर्द बहसों तेजी से प्रमुख होती जा रही हैं। यह एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान करता है जिससे:

- केवल प्रक्रियात्मक लोकतंत्र की सीमाओं को समझा जा सके।
- आधुनिक शासन में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की भूमिका का मूल्यांकन किया जा सके।
- असमानता और अन्याय को दूर करने में अंबेडकर के विचारों की निरंतर प्रासंगिकता का आकलन किया जा सके।

लोकतंत्र को एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक और दार्शनिक संदर्भ में स्थापित करके, यह ढांचा

इस बात पर जोर देता है कि सच्चे लोकतंत्र के लिए न केवल संस्थागत व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है, बल्कि सामाजिक संबंधों और नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

6. चर्चा

6.1 लोकतंत्र और सामाजिक न्याय

बी. आर. अंबेडकर ने तर्क दिया कि लोकतंत्र को राजनीतिक समानता से आगे बढ़कर समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी असमानताओं को दूर करके सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना चाहिए। उनका मानना था कि जाति-आधारित भेदभाव ऐसी संरचनात्मक बाधाएं पैदा करता है जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में समान भागीदारी को रोकती हैं (दत्ता, 2025)। इसलिए, आरक्षण, सकारात्मक कार्रवाई और कानूनी सुरक्षा उपायों पर उनका जोर केवल क्षतिपूर्ति के लिए नहीं, बल्कि प्रकृति में परिवर्तनकारी था (दुबे, 2020)। इन उपायों का उद्देश्य सभी के लिए समान अवसर तैयार करना और हाशिए पर पड़े समुदायों को अपने लोकतांत्रिक अधिकारों का प्रभावी ढंग से प्रयोग करने में सक्षम बनाना है।

6.2 भारतीय ज्ञान प्रणाली की आलोचना

अंबेडकर ने भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने इसके नैतिक आदर्शों और इसकी सामाजिक प्रथाओं के बीच अंतर स्पष्ट किया। धर्म और न्याय जैसी अवधारणाओं की दार्शनिक समृद्धि को स्वीकार करते हुए भी, उन्होंने यह बताया कि इन आदर्शों का उपयोग अक्सर सामाजिक पदानुक्रम और बहिष्कार को सही ठहराने के लिए किया जाता था (शर्मा, 2024)। उनके अनुसार, पारंपरिक ढांचों के भीतर जाति के संस्थागतकरण ने समानता और न्याय के सिद्धांतों को कमजोर कर दिया; जिसके कारण लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ तालमेल बिठाने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली के कुछ तत्वों की पुनर्व्याख्या करना या उन्हें अस्वीकार करना आवश्यक हो गया।

6.3 परंपरा और आधुनिकता का समन्वय

भारतीय परंपराओं को पूरी तरह से नकारने के बजाय, अंबेडकर ने उन्हें इस तरह से पुनर्निर्मित करने का प्रयास किया जो लोकतांत्रिक आदर्शों का समर्थन करे। बौद्ध धर्म के साथ उनका जुड़ाव समानता, तर्कसंगतता और करुणा के लिए एक स्वदेशी दार्शनिक आधार खोजने के उनके इसी प्रयास को दर्शाता है (सलूजा, 2024)। यह समन्वय यह प्रदर्शित करता है कि परंपरा और आधुनिकता स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि गहन चिंतन के माध्यम से उनमें सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार, अंबेडकर का दृष्टिकोण सांस्कृतिक विरासत को समकालीन लोकतांत्रिक सिद्धांतों के साथ एकीकृत करने के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

6.4 संविधानवाद और लोकतंत्र

अंबेडकर ने भारतीय संविधान के माध्यम से अपने लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को व्यवहार में उतारा; यह संविधान मौलिक अधिकारों, कानून के समक्ष समानता और सामाजिक न्याय जैसे सिद्धांतों को संस्थागत रूप प्रदान करता है (दुबे,

2020)। यह संविधान व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करने और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए एक कानूनी ढाँचे के रूप में कार्य करता है, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समूहों के लिए। संवैधानिक नैतिकता पर उनका जोर पारंपरिक सामाजिक मानदंडों की तुलना में लोकतांत्रिक मूल्यों के पालन के महत्व को रेखांकित करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि शासन व्यवस्था न्यायपूर्ण और जवाबदेह बनी रहे।

6.5 समकालीन प्रासंगिकता

अंबेडकर के विचारों की आज के भारत में भी बहुत ज़्यादा प्रासंगिकता है, जहाँ जातिगत भेदभाव, आर्थिक असमानता और लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं (सुरेशा, 2024)। लोकतंत्र को सामाजिक बदलाव के एक साधन के रूप में देखने का उनका नज़रिया इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है। आज के संदर्भ में, समानता, गरिमा और समावेश पर उनका जोर लोकतांत्रिक संस्थाओं को मज़बूत करने और एक ज़्यादा न्यायपूर्ण समाज को बढ़ावा देने के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत का काम करता है।

7. निष्कर्ष

लोकतंत्र, भारतीय ज्ञान प्रणाली और बी. आर. अंबेडकर के बीच का रिश्ता परंपरा और आधुनिकता के बीच एक गतिशील तालमेल को दिखाता है। जहाँ एक तरफ़ भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समृद्ध बौद्धिक विरासत देती है, वहीं इसमें कुछ ऐसे तत्व भी हैं जो लोकतांत्रिक आदर्शों से मेल नहीं खाते।

अंबेडकर ने सामाजिक न्याय, समानता और संवैधानिक नैतिकता पर आधारित लोकतंत्र के एक बदलाव लाने वाले नज़रिया की वकालत करके इन विरोधाभासों को दूर किया। उनके विचार हमें लोकतंत्र को एक ऐसी जीवन शैली के रूप में फिर से सोचने की चुनौती देते हैं जो सभी के लिए गरिमा सुनिश्चित करती है। इस प्रकार, भारतीय लोकतंत्र का भविष्य परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाने और साथ ही ढाँचागत असमानताओं को खत्म करने में निहित है।

संदर्भ

1. सक्सेना, आर., एवं सक्सेना, पी. (2021). भारतीय लोकतंत्र: परंपरा और आधुनिकता का अंतर्संबंध. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, पृ. 77
2. शर्मा, वी. (2024). भारतीय ज्ञान प्रणाली और समकालीन समाज. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन, पृ. 61
3. दत्ता, एस. (2025). जाति, असमानता और भारतीय समाज: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 89
4. रमेश, के. (2022). डॉ. बी. आर. अंबेडकर का लोकतांत्रिक चिंतन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन, पृ. 93
5. सुरेशा, एम. (2024). सामाजिक लोकतंत्र और अंबेडकर का दृष्टिकोण. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन, पृ. 104

6. सलूजा, आर. (2024). बौद्ध धर्म और अंबेडकर: एक दार्शनिक अध्ययन. नई दिल्ली: पियरसन इंडिया, पृ. 56
7. दुबे, ए. (2020). भारतीय संविधान और सामाजिक न्याय. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स, पृ. 168
8. माथुर, एस., एवं ठाकुर, डी. (2022). भारतीय समाज में सामाजिक समानता और लोकतंत्र. जयपुर: रावत पब्लिकेशन, पृ. 82
9. क्रेसवेल, जे. डब्ल्यू. (2014). शोध डिजाइन: गुणात्मक, मात्रात्मक एवं मिश्रित विधियाँ (अनुवादित संस्करण). नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन, पृ. 96



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE